ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स्तोतुर्मघवन् काममा दृण।।

ऋग्वेद 1/57/5

हे ऐश्वर्यशालिन् ! भक्त की कामनाओं को पूर्ण कर।

O the Bounteous Lord! fulfil all the good wishes and desire of your devotees.

वर्ष 42, अंक 24 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 6 मई, 2019 से रविवार 12 मई, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) के अवसर पर करें पर्यावरण संरक्षण में सहयोग

आर्यसमाजें एवं आर्य संस्थाएं अधिकाधिक स्थानों - पार्कों, सकड़ों, चौक-चौराहों पर

सार्वजनिक रुप से पर्यावरण शुद्धि यज्ञों का आयोजन करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से समस्त आर्यसमाजों, विद्यालयों, गुरुकुल, आश्रमों एवं आर्यजनों की सेवा में खुला परिपत्र

माननीय महोदय, सादर नमस्ते !

आशा है प्रभु कृपा से आप सपरिवार स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

आपको विदित ही है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रतिवर्ष विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) के अवसर पर दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं शिक्षण संस्थानों

के सहयोग से दिल्ली में विभिन्न स्थानों पर विशेष यज्ञों के माध्यम से विश्व पर्यावरण दिवस को वास्तविक रूप से आयोजित करती है। इसी क्रम में गत वर्ष 4-5-6 जून के दिन दिल्ली की अनेक आर्यसंस्थाओं ने अनेक स्थानों पर 2 से लेकर दहाई के आंकड़े तक यज्ञ सम्पन्न करवाए थे। सभा के आह्वान पर केवल दिल्ली ही नहीं अपितु राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले निकटवर्ती राज्यों के आर्य संस्थानों ने भी इससे प्रेरित होकर सार्वजनिक स्थानों पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञों का आयोजन किया। समस्त आर्य सस्थाओं ने पर्यावरण शुद्धि यज्ञ के बैनर लगाए तथा यज्ञ से सम्बन्धित पत्रक भी बंटवाकर आम व्यक्ति को यज्ञ के महत्त्व के विषय में बताया।

पर्यावरण दिवस के अवसर पर सार्वजनिक रूप से पर्यावरण शुद्धि यज्ञों के माध्यम से हम अधिक से अधिक व्यक्तियों तक पहुंच सकें, इसी विचार को दृष्टिगत रखते हुए **2-3-4-5 जून, 2019** के दिन निर्धारित किए गए हैं। हम चारों दिन अपने-अपने क्षेत्र में आर्यसमाज भवनों से बाहर निकलकर - पार्कों, चौक-चौराहों, सड़कों, विद्यालयों, धर्मशालाओं, आर. डब्ल्यू ए., सोसाइटियों, आदि खुले मैदानों, सार्वजनिक स्थलों पर सार्वजनिक रूप से पर्यावरण संरक्षण यज्ञ करवाएं तथा वहां उपस्थित महानुभावों तक बैनर तथा पत्रकों के माध्यम से अधिकाधिक यज्ञ की उपयोगिता का सन्देश पहुंच सके। इस हेतु सभा ने स्पॉन्सर बैनर तथा पत्रक बनवाए हैं जो सब समाजों को जो अपने क्षेत्र में यज्ञ करवाना चाहें, नि:शुल्क दिए जाएंगे।

पर्यावरण दिवस के अवसर पर सार्वजनिक रूप से पर्यावरण शुद्धि यज्ञों के माध्यम से हम अधिक से अधिक व्यक्तियों तक पहुंच सकें, इसी विचार को दृष्टिगत रखते हुए 2-3-4-5 जून, 2019 के दिन निर्धारित किए गए हैं। हम चारों दिन अपने-अपने क्षेत्र में आर्यसमाज भवनों से बाहर निकलकर - पार्कों, चौक-चौराहों, सड़कों, विद्यालयों, धर्मशालाओं, आर. डब्ल्यू ए., सोसाइटियों, आदि खुले मैदानों, सार्वजनिक स्थलों पर सार्वजनिक रूप से पर्यावरण संरक्षण यज्ञ करवाएं तथा वहां उपस्थित महानुभावों तक बैनर तथा पत्रकों के माध्यम से अधिकाधिक यज्ञ की उपयोगिता का सन्देश पहुंच सके।

आपकी सुविधार्थ बैनर तथा पत्रक का मैटर www.thearyasamaj.org पर भी उपलब्ध कराया गया है। आप वहां से बैनर/पत्रक डाउनलोड करके भी अपनी आवश्यकता के अनुसार क्षेत्रीय सहयोगी महानुभाव का नाम नीचे प्रिन्ट करवा सकते हैं।

पर्यावरण शुद्धि यज्ञ हेतु जो संस्थाएं/आर्य महानुभाव सभा से स्पॉन्सर बैनर लेना चाहें वे अपनी संस्था के लैटर पैड पर लिखकर दें कि आप/आपकी आर्य समाज/ विद्यालय/ गुरुकुल/ संस्था की कितने स्थानों पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करवाने की योजना है। उसी के अनुसार प्रत्येक यज्ञ हेतु 40 पत्रक एवं एक बैनर दिया जाएगा। यदि आप/आपकी आर्यसमाज/संस्थान 5 से अधिक स्थानों पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करवा रहे हैं तो दो बैनर, 10 से अधिक यज्ञ हेतु 3 बैनर, 20 से अधिक यज्ञ हेतु 4 बैनर एवं 30 से अधिक यज्ञ हेतु 5 बैनर अधिकतम दिये जाएंगे। पत्रकों में नीचे खाली स्थान दिया गया है वहां आप अपने आर्य समाज की मोहर लगाकर (जिसमें फोन नं. आदि लिखा हो) वितरित करें। यदि आपको इससे अधिक पत्रकों की आवश्यकता है तो आप सभा कार्यालय से 5/-रुपये सैंकड़ा की दर से खरीद सकते हैं।

अत: आपसे अनुरोध है कि यज्ञ के प्रचार-प्रसार हेतु इस वर्ष अधिक से अधिक स्थानों पर यज्ञ सम्पन्न करवाएं तथा शीघ्र ही अपनी सूची सभा को भेजें ताकि उसके अनुरूप साधन प्रकाशित करवाए जा सकें।

नोट :1. उपरोक्त सामग्री सभा कार्यालय से 27 मई से 1 जून रात्रि 7:30 बजे तक प्राप्त की जा सकेगी।

2. नि:शुल्क पत्रक एवं बैनर प्राप्त करने के लिए श्री सन्दीप आर्य जी 9650183339 से सम्पर्क करें।

3. आप जहां पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करवाएं वहां के फोटो व्हाट्सअप नं. 9540045898/9650183339 पर तुरन्त भेजें।

विशेष नोट : अपनी आर्य समाजों में यज्ञ कुण्ड एवं यज्ञ पात्रों के दो तीन सैट, यज्ञ पुस्तकें, हवन सामग्री, समिधा का पर्याप्त स्टाक रखें ताकि यदि कोई महानुभाव अपने यहां यज्ञ करवाना चाहें तो वह आप से सम्पर्क करके यज्ञ करवा सके। लोकल वैलफेयर एसोसिएशन आदि से सम्पर्क करके वहां भी यज्ञ करवाने से काफी लाभ होता है। बैनर में यज्ञ के लाभ का चार्ट भी दिया गया है- साथ ही पत्रक में लैबोरेट्री टैस्ट के परिणाम भी प्रकाशित किये गये हैं जो प्रचार की दृष्टि से विशेष उपयोगी होंगे। समाज के बाहर एक बोर्ड भी लगावें कि प्रत्येक अवसर पर यज्ञ करवाने की व्यवस्था है। सम्पर्क सूत्र में अपने पुरोहित जी का नाम व मो. नं. भी अवश्य लिखें। धन्यवाद सहित

आपका

विनय आर्य, महामन्त्री

वेद-स्वाध्याय

सत्य और अनृत का महान विवेक

दृष्टवा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धाꣳ सत्ये प्रजापतिः।। - यजु. 11/7
ऋषिः **शंखः।।** देवता - **प्रजापतिः।।** छन्दः **अतिशक्वरी।।**

शब्दार्थ - प्रजापतिः = प्रजापति ने **दृष्ट्वा** = देखकर **रूपे** = सब रूप को दो विभागों में **सत्यानृते** = सत्य और अनृत, सच्चा और झूठा इन दो विभागों में **व्याकरोत्** = स्पष्ट पृथक्-पृथक कर दिया। **प्रजापतिः** = उस प्रजापति ने **अनृते** = अनृत में, झूठ में **अश्रद्धाम्** = अश्रद्धा को **अदधात्** = रक्खा है और **सत्ये** = सत्य में, सचाई में **श्रद्धाम्** = श्रद्धा को रक्खा है।

विनय - इस संसार में सब जगह सच और झूठ इतने मिले हुए दिखाई देते हैं कि इनमें भेद करना असम्भव-सा हो जाता है। प्रत्येक सत्य के साथ झूठ ऐसी सूक्ष्मता के साथ लगा हुआ है और हर एक झूठ के मूल में सत्य ऐसी गुप्तता से समाया हुआ है कि सच और झूठ का पृथक्करण करने में बड़े-बड़े तत्त्ववेत्ता भी हार मानते हैं, पर सत्य और अनृत तो एक-दूसरे से बिलकुल ही उलटे हैं। ये एक जगह कैसे रह सकते हैं? फिर भी जो हम इन दोनों स्वभावतः विरोधी वृत्तियों का विवेक नहीं कर पाते हैं, इसका कारण यह है कि हम स्वाभाविकता से हट गये हैं, हम अस्वाभाविक बनकर प्रजापति से दूर हो गये हैं। हम सब प्रजाओं को उत्पन्न करनेवाले, सब संसार के स्वामी, प्रजापति ने तो संसार के सब सत्य और अनृत रूप को साक्षात् पृथक्-पृथक् देखा है और स्पष्ट पृथक्-पृथक् कर रक्खा है। इन दोनों रूपों की पृथक्ता के आधार पर ही बनाये अपने नियमों द्वारा वह इस जगत् का और अपनी सब प्रजाओं का शासन कर रहा और पति हो रहा है। तो क्या इन जगत्-शासक-नियमों को हम प्रजाओं के लिए बिना बताये ही वह इन द्वारा हमपर शासन कर रहा है? नहीं, उसने तो जहाँ बाहर जगत् में सत्य और अनृत का विवेक किया और उसके अनुसार जगत् को संचालित कर रहा है, वहाँ उसने हमारे अन्दर भी वह साधन रक्खा है जिससे कि हम प्रजा-लोग सत्य और अनृत का स्पष्ट भेद कर सकें। उसने हमारे अन्तःकरण में अनृत के लिए अश्रद्धा और सत्य के लिए श्रद्धा स्वभावतः उत्पन्न कर रक्खी है। वे प्रजापति हममें से प्रत्येक प्रजा के हृदय में स्वयं आ बैठे हैं और प्रत्येक सत्य में श्रद्धा को उपजाते तथा प्रत्येक असत्य में अश्रद्धा को उद्भूत करते हुए बैठे हुए हैं। फिर भी यदि हम सत्य और अनृत का विवेक न कर सकें तो हम कितने दुर्भागे हैं! सचमुच सत्यासत्य का विवेक जहाँ महाकठिन है, वहाँ अत्यन्त सहज भी है। जो मलिन हृदयवाले पुरुष प्रजापति से दूर होकर केवल तर्क द्वारा सत्य और असत्य का भेद जानना चाहते हैं उनके लिए यह निःसन्देह महा कठिन है, किन्तु जो प्रजापति की शरण में पड़े हुए हैं और जो अपने शुद्ध अन्तःकरण में, उसकी दी हुई श्रद्धा और अश्रद्धा की पक्की कसौटी को रखनेवाले हैं, उन भक्त पुरुषों के लिए यह अत्यन्त सहज है।

भाइयो! तनिक अपने अन्दर टटोलो और देखो, प्रजापति ने तो हम सबके अन्दर अनृत के लिए अश्रद्धा और सत्य के लिए श्रद्धा पैदा की हुई है।

-: साभार :-वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

कमजोर कन्धों पर बढ़ता इंसानी बोझ

......अधिकांश शहरी परिवारों में दादा-दादी हैं, माँ और पिता हैं लेकिन बच्चा एक है। आने वाले समय में जब वह बच्चा थोडा बड़ा होगा तो उसके कंधे पर चार इंसानी जिंदगियों का बोझ होगा। यदि वह लड़का है और किसी ऐसे ही परिवार की अकेली लड़की से शादी करेगा तो दोनों के कंधों पर आठ बुजुर्गों की जिम्मेदारी होगी। आप स्वयं में इस जिम्मेदारी को महसूस करें क्या यह बोझ आप वहन कर पाएंगे? यदि कर भी पाए तो कितने दिन? ......

साल 2013 में एक फिल्म आई थी जिसका नाम था ये जवानी है दीवानी' फिल्म का नायक आज के दौर के युवकों और युवक होते किशोरों को अपनी जिंदगी अपनी शर्तों पर जीना सिखा रहा था। उसे शादी-ब्याह में यकीन नहीं था। उसके अनुसार भला कोई एक व्यक्ति के साथ सालों साल एक ही चारदीवारी के बीच कैसे गुजार सकता है। यानि फिल्म का नायक यह बता रहा था कि शादी-विवाह बेकार के पचड़े हैं, मस्ती करो और एक दिन दुनिया से चले जाओ। यह फिल्म युवाओं के लिए काफी लुभावनी थी। किन्तु इस फिल्म में नायक जीवन के एक हिस्से का जिक्र करना भूल गया था और वह है बुढ़ापा। उम्र की इस अवस्था में इन्सान को सबसे ज्यादा अपनों की जरूरत पड़ती है कि कोई देखभाल करे, उसे अपनेपन के साथ स्नेह का आभास कराए।

भले ही जीवन के उस पड़ाव पर फिल्म के निर्माता निर्देशक ध्यान न दे पाए हों लेकिन पिछले साल संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट ने इस ओर सबका ध्यान खींचा है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार साल 2018 के अंत में 65 साल से अधिक उम्र के बुजुर्गों की संख्या 5 साल से कम उम्र के बच्चो से अधिक हो गई है। यानि दुनिया में बच्चों से ज्यादा बुजुर्गों की संख्या हो गयी है। दुनिया के लगभग आधे देशों में आबादी के मौजूदा आकार को बरकरार रखने के लिए पर्याप्त बच्चे नहीं हैं। यानि कल जब आप इस मौज-मस्ती की जिन्दगी से निकलकर बाहर आयेंगे तो अपने आपको नितान्त अकेले में या किसी वृद्ध आश्रम में पाएँगे।

इसे कुछ इस तरह समझिये कि अधिकांश शहरी परिवारों में दादा-दादी हैं, माँ और पिता हैं लेकिन बच्चा एक है। आने वाले समय में जब वह बच्चा थोडा बड़ा होगा तो उसके कंधे पर चार इंसानी जिंदगियों का बोझ होगा। यदि वह लड़का है और किसी ऐसे ही परिवार की अकेली लड़की से शादी करेगा तो दोनों के कंधों पर आठ बुजुर्गों की जिम्मेदारी होगी। आप स्वयं में इस जिम्मेदारी को महसूस करें क्या यह बोझ आप वहन कर पाएंगे? यदि कर भी पाए तो कितने दिन?

भले ही कुछ लोग आज भारत को एक युवा देश मानते हों क्योंकि देश की 60 फीसदी से ज्यादा आबादी नौजवानों की है। आगे बढ़ते भारत की ताकत भी ये नौजवान हैं लेकिन अगले 20 वर्षों में भारत की तस्वीर एकदम बदल जाने वाली है। तब भारत के साथ वही होगा जो अमेरिका और जापान के साथ हो रहा है। आज अमेरिका, यूरोप और जापान में बुजुर्गों की संख्या बढ़ गई है। इस कारण आज ये बुजुर्ग अपने देश के युवाओं के लिए उत्पादक कम और बोझ ज्यादा हो गये हैं। फैमिली प्लानिंग जैसे के चलते एक-एक बच्चा पैदा किया और आज उस एक बच्चे के ऊपर परिवार के कई-कई बुजुर्गों की जिम्मेदारी आ पड़ी है।

यदि चिंता को भारत के संदर्भ में देखें तो पिछले दो दशकों में भारत के गांवों से शहरों की ओर लोगों की संख्या भी बहुत बढ़ी है। समाज आधुनिक हो गया। इस आधुनिकता से एकल परिवार बढ़े। यानी हम दो हमारा एक की नीति चल पड़ी। इस माहौल में युवाओं को भले ही निजात मिल रही है, अपनी मर्जी से जीने का मौका मिल रहा हो, लेकिन कल वह दो और उनका वह एक कैसे अपने परिवार के साथ उन बुजुर्गों की जिम्मेदारी से सम्भाल पायेगा?

यदि यह सब इसी तरह चलता रहा तो आने वाले भविष्य में बच्चों के कन्धों पर पारिवारिक जिम्मेदरियों समेत मानव सभ्यता के संतुलन को बनाए रखने का जो बोझ बढ़ेगा। इससे समाज को बनाए रखना बहुत मुश्किल होगा। यानि पोते-पोतियों से अधिक दादा-दादी, नाना-नानी वाले समाज में इसके सामाजिक और आर्थिक परिणामों के बारे में सोचिए!

असल में 1960 में महिलाओं की औसत प्रजनन दर लगभग 5 बच्चों की थी। करीब 60 साल बाद यह आधे से भी कम रह गई है। ज्यादातर परिवारों में एक बच्चे का चलन यह कहकर चल पड़ा है कि शिक्षा समेत आज परवरिश महंगी हो गयी है तो दो या तीन बच्चों का बोझ हम नहीं उठा सकते। अन्य वजहों से भी कई परिवार बच्चे पैदा करने की योजना टाल देते हैं। जिन परिवारों में महिलाएं ज्यादा पढ़ी-लिखी हैं, वे मां की परंपरागत भूमिका निभाने को तैयार नहीं हैं।

हाँ कुछ देशों ने इस गंभीर चिंता पर कदम उठाने जरुर शुरू कर दिए हैं। पिछले दिनों यूरोपीय देश हंगरी के प्रधानमंत्री विक्टर ऑर्बन ने एक घोषणा करते हुए कहा था कि जिन महिलाओं के चार या उससे अधिक बच्चे होंगे, उन्हें जीवनभर आयकर से छूट दी जाएगी। यही नहीं उपायों के तौर पर वहां के युवा जोड़ों को करीब 26 लाख रुपए का ब्याज मुक्त कर्ज दिया जाएगा। उनके तीन बच्चे होते ही यह कर्ज माफ कर दिया जाएगा।

हालाँकि इस एक दूसरा पहलू भी है जो यह दर्शाता है कि दुनिया की कुल आबादी बढ़ रही है। 2024 में वैश्विक आबादी 8 अरब हो सकती है। अकेले भारत में भले ही जनसँख्या बड़ी तेजी से बढ़ रही हो लेकिन आबादी का बड़ा हिस्सा बुजुर्ग है और बुजुर्गों की संख्या बढ़ने का मतलब यह है कि काम करने वाले लोगों की संख्या घट जाना। इससे आर्थिक विकास तो बाधित होगा ही साथ भारतीय समाज में व्यापक सामाजिक परिवर्तन दिखाई देंगे। जनसांख्यिकी विशेषज्ञ के अनुसार आगे संसाधनों की मांग बढ़ेगी। इससे पेंशन और स्वास्थ्य सेवा क्षेत्रों पर दबाव बढ़ेगा। जिन देशों में बच्चों की संख्या कम होगी वहां अप्रवासी ज्यादा संख्या में पहुंचेंगे जिसके कारण उस देश के सामाजिक धार्मिक ताने-बाने से लेकर उनकी सभ्यता और संस्कृति पर भी खतरा होगा।

- सम्पादक

विचारों और भावनाओं की अजीब दुनिया

उदासी, खुशी, आश्चर्य, क्रोध, घृणा, भय, प्रेम, ममता और वासना यह सब वे भावनाएं हैं जिनके साथ इन्सान हर रोज अपना जीवन जीता है। पर ध्यान से सोचिए कि यह सब भावनाएं कहां से आ रही हैं? कुछ हद तक तक अस्तित्व सम्बन्धी हो सकती हैं, मगर बाकी सब सिर्फ मन के अलग-अलग रूप हैं। कल्पनाएँ हैं, एक सोच है और एक विचारों का बहुत बड़ा केंद्र है। या कहें कि दिमाग ने जो सूचनाएं इकट्ठा की हैं वे शरीर की विभिन्न गतिविधियों से प्रकट हो रही हैं।

उदाहरण जैसे आप चल रहे हैं यकायक कोई एक भावना मन में खड़ी होती है, आप मुस्कुरा देते हैं। आप बैठे हैं कुछ सोचते हैं, अचानक कभी खुश तो कभी दु:खी हो जाते हैं। असल में मनोवैज्ञानिक पहलू भी पूरी तरह से अस्तित्व को नहीं परख पाया कि आखिर मन में असंख्य भावनाओं का निर्माण क्यों और कैसे हो रहा है? हाँ, हमारे वैदिक ग्रन्थ जरुर साबित कर चुके हैं कि इन्सान अपनी पांच इंद्रियों से जो सूचनाएं इकट्ठा कर रहे हैं, वे वास्तव में वैसी नहीं होतीं, जैसी दिखती हैं। दूसरा जीवन के बारे में इन्सान की जो धारणाएं हैं, आधुनिक तंत्रिका विज्ञान उसे पूरी तरह खारिज कर रहा है। वैज्ञानिक बातों को छोड़ दीजिए, आप अपने अनुभव के स्तर पर देख सकते हैं कि अगर आप चाहें, तो अपने मन में रोज, हर पल एक नई भावना पैदा कर सकते हैं। किसी से लगाव कर सकते है, किसी से नफरत के अलावा किसी के प्रति हिंसा और प्रेम की भावना पैदा कर सकते हैं, अर्थात् मन हर समय कोई न कोई प्रक्रिया पैदा कर रहा है और इन्सान उन भावनाओं से संचालित भी हो रहे है।

यानि इन्सान के मन में भावनाएं जैसी उठ रही हैं, वह वैसा कार्य करेगा, एक समय में दो चीज देखिये दो इन्सान आपस में व्यावहारिक संवाद कर रहे हैं। दूसरे दो इन्सान उसी समय आपस में बुरा बर्ताव, झगड़ा-फसाद कर रहे हैं। समय एक है समय दो नहीं हैं। बस भावनाएं दो हैं और दोनों के शरीर भावनाओं के साथ चल रहे हैं। जब तक भावनाओं पर काबू है तब तक जो भी घटित होगा वह अन्दर घटित होगा किन्तु भावनाओं पर काबू खोने पर वह सिर्फ उन्माद-पागलपन बन जाता है, तब सब कुछ बाहर घटित होगा। यह इन्सान की अपनी रचना है, इसलिए इन्सान इसे अपनी मर्जी से आकार देते रहे हैं। सोचो इन्सान अपने लिए आनंद के अलावा कुछ और नहीं चुनते। लेकिन अस्तित्व की समस्याओं जकड़े रहते हैं। कई बार दु:ख का भी चुनाव करना पड़ता है तो कई बार क्रोध और उदासी का भी।

यानि इन्सान हर समय दो मोर्चों पर खड़ा रहता है। एक मानसिक मोर्चा जिसे चिंता, तनाव या दबाव-प्रेशर कहते हैं। दूसरा व्यावहारिक मोर्चा। जैसे एक ही समय में आप एक इन्सान से बड़े प्रेम से वार्तालाप करते हैं लेकिन उसी समय आप किसी अन्य पर झल्ला उठते है। यहाँ इन्सान को स्वयं के दो अस्तित्वों का निर्माण करना पड़ता है। मैं-हूँ और मेरा-कौन है? जब इन्सान के अन्दर ये दो भावनाएं खड़ी होती हैं तब अपेक्षा के तन्तु धीरे-धीरे बाहर आकर भावनाओं को पकड़ लेते हैं। ये भावनाएं ही हैं, जो इन्सान के जीवन में प्रवाह लाती हैं। लेकिन यही भावनाएं तब एक समस्या बन जाती हैं, जब ये आपके नियंत्रण से बाहर जाकर पागलपन का रूप ले लेती हैं। अगर इन्सान भावनाओं पर ध्यान देते हैं, उनके प्रति जागरूक होते हैं तो भावनाएं कमजोर हो जाएंगी। इन्सान भावनाओं को अपने अनुरूप चला लेते हैं किन्तु जब इन्सान इन पर ध्यान नहीं देते तो भावनाएं प्रबल होकर इन्सान को अपने अनुसार चलाती हैं।

असल में इन्सान के अन्दर अपेक्षा के तंतु जमा होते हैं अपने हित से जुड़े विचार पैदा होते हैं फिर भावनाओं का निर्माण होता है। इसके बाद आता है भावनाओं को टटोलने का सिद्धांत। यहाँ इन्सान दूसरे की भावनाओं में खुद को खोजता है, यदि वह उन भावनाओं में मिल गया तो यहाँ भी सवाल खड़े हो रहे हैं।

पुरुष सोचता है कि मेरा पद-प्रतिष्ठा मेरी धन-संपदा और एक स्त्री सोचती है मेरा रूप, मेरा रंग, मेरा यौवन, इन सबसे स्वार्थी अपेक्षाओं की भावनाओं का निर्माण हो रहा है। क्रोध के तंतु जमा होते हैं तो क्रोध की भावना का निर्माण होता है, इर्ष्या के तंतु जमा होंगे तब इर्ष्या का निर्माण होगा।

असल में यह कोई समस्या नहीं है, बिना भावनाओं के इन्सान एक सूखी लकड़ी की तरह होते हैं ये भावनाएं ही हैं, जो इन्सान के जीवन को मधुर और खूबसूरत बनाती हैं। इन्सान को इन्सान से अलग करती हैं तो जोड़े भी रखती हैं। भावनाओं की गिरफ्त से आज तक कोई नहीं बच पाया। बस इन्सान को सावधान रहना चाहिए कि भावनाओं को स्वयं पर कब्जा न करने दें उनका दास न बने बल्कि विजेता बने। *- राजीव चौधरी*

...........असल में मनोवैज्ञानिक पहलू भी पूरी तरह से अस्तित्व को नहीं परख पाया कि आखिर मन में असंख्य भावनाओं का निर्माण क्यों और कैसे हो रहा है? हाँ, हमारे वैदिक ग्रन्थ जरुर साबित कर कर चुके हैं कि इन्सान अपनी पांच इंद्रियों से जो सूचनाएं इकट्ठा कर रहे हैं, वह वास्तव में वैसी नहीं होतीं, जैसी दिखती हैं। दूसरा जीवन के बारे में इन्सान की जो धारणाएं हैं, आधुनिक तंत्रिका विज्ञान उसे पूरी तरह खारिज कर रहा है। वैज्ञानिक बातों को छोड़ दीजिए, आप अपने अनुभव के स्तर पर देख सकते हैं कि अगर आप चाहें, तो अपने मन में रोज, हर पल एक नई भावना पैदा कर सकते हैं।....................

प्रेरक प्रसंग — महात्मा नारायण स्वामीजी के शब्द हैं !

"शोलापुर निवासियों में से हमारे अनेक शुभ-चिन्तक हमारे पास आते और कहते थे कि मैं कभी कहीं अकेला न जाया करूँ, क्योंकि यह बात खतरे से खाली नहीं है।"

फिर आगे लिखा है कि मैं और स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी नित्य प्रात: 4 बजे उठकर जंगल चले जाते थे। ढाई-तीन मील दूर जाकर शौच-स्नान आदि से निवृत्त होकर प्राय: सात बजे के लगभग लौटा करते थे।

घण्टों तक नगर के बाहर आर्यनगर में ये महात्मा कार्य करते थे। जब नारायण स्वामी जेल चले गये तो स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी अकेले बाहर भ्रमण को जाते। शोलापुर निवासियों ने मुझे स्वयं बताया कि हमने कई बार श्रीमहाराज को रोका, परन्तु लौहपुरुष स्वतन्त्रानन्द का यही उत्तर था कि 'डरना किस बात से? दस-बीस के लिए तो मैं अकेला ही पर्याप्त हूँ।' मैंने विस्तार से ये बातें लौहपुरुष ग्रन्थ में लिखी हैं।

महात्मा नारायण स्वामी जब जेल गये तो वे अपना मृत्युपत्र (डैथविल) लिखकर गये। इससे स्पष्ट है कि महाराज इस धर्मयुद्ध में जीवन-आहुत करने की पूरी तैयारी करके गये थे। आज आर्यसमाज को ऐसे महान् तपस्वी, निर्भीक, मृत्युंजय, महाबली नेता चाहिएँ। राजनेताओं व शासन की परिक्रमा करने वाले समाज का कुछ न संवार सकेंगे। खेद है आज आर्यसमाज के बड़े कार्यक्रमों में रौनक के लिए शासक बुलाने पड़ते हैं। ढोंगी गुरुओं की भीड़ कितनी हो जाती है। ऐसा क्यों? आज पण्डित लेखराम, आर्यमुनि, श्यामभाई वाली अखण्ड निष्ठावाले व्यक्तियों के हाथ में हमारी बागडोर नहीं।

आओ, आर्यवीर दल, आर्ययुवक समाजें, आर्यकुमार सभाएँ और व्यायाम शालाएँ स्थान-स्थान पर खोलें, तभी हम अभय बन सकेंगे।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

_तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी_ : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित
नैतिक शिक्षा की पुस्तकें
नर्सरी से 12वीं कक्षा तक
आकर्षक छूट 25%
बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र
सत्य की राह Vedic Path to Absolute Truth
मात्र 30/- रु. हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध
प्राप्ति स्थान : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. नं. 9540040339

आध्यात्मिक शिविर में स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक के प्रवचनों के अमृत बिन्दु

वेदों में ज्ञान विज्ञान है। वेद द्वारा दिया गया ज्ञान है कि जिसका आदि नहीं, उसका अनादि भी नहीं।

तीन वस्तुएं सदा से हैं, ईश्वर, आत्मा व प्रकृति! प्रकृति जड़ हैं, जड़ से जड़ वस्तु ही बनती हैं। प्रकृति से सारा जगत् बना, बनाने वाला चेतन है।

संसार की हर वस्तु में सुख-दु:ख हैं। प्रकृति और जीवात्मा पूर्ण सुख नहीं दे सकते हैं। प्रकृति की समीपता से आत्मा को सुख व दु:ख भोगना पडता है, लेकिन ईश्वर की समीपता से परम सुख प्राप्त होता है।

ईश्वर व आत्मा चेतन हैं, चेतन क्रिया शील होता है, इच्छाओं के कारण कर्म करता है। चेतन वस्तु हमेशा चेतन ही रहेगी। इसमें इच्छा, राग व द्वेष की भावना है, क्रियाशील होना चाहती है, सुख- दु:ख की अनुभूति होती है, ज्ञान-विज्ञान है। लेकिन आत्मा ईश्वर का अंश नहीं है। दोनों के गुण, कर्म व स्वभाव अलग अलग हैं।

ईश्वर एक है, आत्माएं अनंत हैं, ईश्वर सर्वव्यापक है, निराकार है, चेतन है, न्यायकारी है, परोपकारी है, परम सुख केवल ईश्वर ही दे सकता है। जीवात्माएँ ईश्वर से ही परम सुख पा सकती हैं। ईश्वर ने करोड़ों वर्ष पहले तीन तरह के परमाणुओं से संसार बनाया - सत्, रज व तम।

बुद्धि निर्णय लेने में सहायक है, दोष स्वीकार नहीं करने देती, स्वीकार करने चाहिए। अहंकार अस्तित्व की अनुभूति में सहायक है, कर्म करने में सहयोगी है। मन या चित्त विचार करने में सहायक है। संकल्प या विकल्प द्वारा सहयोग देता है।

दस इन्द्रिय - पांच ज्ञानेन्द्रिय - आँख, नाक, कान, त्वचा व रसना। पांच कर्मेन्द्रिय - हाथ, पैर, वाणी, मूत्र व मल विसर्जन।

तन्मात्राएँ पांच - शब्द, गंध, रस, दृश्य व स्पर्श।

यह 18 सूक्ष्म शरीर हैं। मोक्ष या प्रलय के अतिरिक्त यह कभी नष्ट नहीं होते हैं।

आर्यसमाज कीर्तिनगर नई दिल्ली में 22अप्रैल से 28 अप्रैल, 2019 पूर्णकालिक आध्यात्मिक शिविर का आयोजन स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक जी के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। पाठकों के धर्म लाभ हेतु शिविर में दिन-प्रतिदिन दिए गए प्रवचनों के यहां लेखबद्ध करके प्रस्तुत किया गया है।

पंच महाभूत - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश से स्थूल शरीर बना।

आत्मा स्वार्थी तथा परोपकारी है, संसारी इच्छाएँ दु:ख देती हैं। मन प्रकृति से बना, प्रकृति जड़ है अत: मन भी जड़ वस्तु है। जीवात्मा कर्म फल हेतु जीवन-मरण के चक्कर में घूमता रहता है। हम आत्मा हैं, शरीर नहीं हैं। यह शरीर जन्म लेता है, परिवर्तनशील है, मरता है लेकिन आत्मा हमेशा रहती है, अर्थात अनादि है। आत्मा का कर्मो के अनुसार शरीर बदलता रहता है, चाहे कीट-पतंग, मछली-मगरमछ, जानवर, पेड़-पौधे या मानव शरीर।

संसार के सबसे अच्छे और बुरे कर्म केवल मनुष्य ही कर सकता है, और मनुष्य जीवन अच्छे कर्मों का फल है। आचरण-व्यवहार-कर्म अच्छे हों। हर व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है। अच्छे-बुरे कर्मों का ज्ञान सब के पास है लेकिन अच्छे कर्मो को करने का प्रयत्न करने से ही अच्छे कर्म होंगे। अच्छे कर्मों का प्रतिशत अधिक होने पर जीवात्मा को मानव शरीर, अच्छे माता-पिता, अच्छा समृद्ध परिवार, स्वास्थ्य शरीर, ज्ञानवान्- अच्छी विद्या, अच्छा जीवन साथी मिल सकेगा। धीरे धीरे अच्छे कर्मों का प्रतिशत बढाएं। स्वयं के पुरुषार्थ से अपने को सुधारने का प्रयत्न करें व दूसरे को प्रेरित करें। लेकिन दु:खी न हो। मनुष्य अपनी बुद्धि का विकास कर सकता है, मनुष्य के पास भाषा की सुविधा है, दो हाथ कार्य करने के लिए हैं, कर्म करने की स्वतंत्रता है तथा चार वेदों का ज्ञान पाने की क्षमता है। हर किसी की चाहत है मनुष्य जीवन मिले। पिछले जन्म के अच्छे कर्मों के फलानुसार यह सुन्दर, सुविधाजनक जीवन मिला। फल ईश्वर की व्यवस्था में कर्मानुसार मिलता है।

दु:खों से छूटकारे हेतु, प्राणी अविद्या आदि क्लेशों से बचने/छूटने के लिए ज्ञान पूर्वक शास्त्रों को पढ़ें। राग-द्वेष न करें और द्वेष में दु:खी न हो। निर्दोष होने पर स्पष्टीकरण करें तथा मन को नियन्त्रित करें। सोचने का तरीका बदलने से सुख प्राप्त कर सकते हैं। दु:ख देने वाली घटनाओं को याद न करें। इच्छाओं को कम करें तो सुख प्राप्त होगा, द्वेष भी कम होगा। इच्छाओं द्वारा, इच्छा पूरी न होने पर दुखी न होकर, दूसरे के द्वारा दु:ख मिलने से उस को गलती बताएँ, अपनी गलती हो तो सुधारें, परिस्थितियों को समझें, दूसरो की इच्छाओं के कारण दुखी न हो, कोई बात नही। मन को संसार की वस्तुओं से हटाएं। जीवात्मा हमेशा से स्वार्थी है।

वस्तुओं में अरुचि पैदा करें, वैराग्य उत्पन्न करें। गुण व दोष देखें, लाभ उठाये लेकिन आसशक्ति न करें, राग उत्पन्न न करें, अशांति पैदा होती है, रुचि उत्पन्न

- शेष पृष्ठ 6 पर

राष्ट्रपति पुरुस्कार प्राप्त होने पर डॉ. रघुवीर वेदालंकार जी का भावपूर्ण सम्मान

आर्य समाज के प्रतिष्ठित विद्वान डॉ. रघुवीर जी वेदालंकार को भारत सरकार द्वारा 4 अप्रैल,19 को 'राष्ट्रपति सम्मान' से पुरस्कृत किया गया। इसी उपलक्ष्य में 21 अप्रैल,19 को आर्य समाज सरस्वती विहार में डॉ. रघुवीर के अभिनन्दन का कार्यक्रम रखा गया। सर्वप्रथम संकल्प आर्य (पुत्र डॉ. रघुवीर वेदालंकार) ने सभी आगन्तुक महानुभावों का सम्मान किया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, आर्य समाज शालीमार बाग, आर्य समाज रोहिणी तथा डॉ. रघुवीर जी के इष्टमित्रों, सम्बन्धियों ने आकर अपनी शुभकामनायें डॉ. रघुवीर जी को अर्पित की। सरस्वती विहार समाज के प्रधान श्री मनचंदा जी तथा शालीमार बाग आर्य समाज समाज के पूर्व प्रधान श्री भूदेव जी ने कहा कि डॉ. रघुवीर इन दोनों आर्य समाजों के जन्यकाल से सक्रिय सदस्य रहे हैं। उनका यह सम्मान हमारे पूरे आर्य समाज का ही सम्मान है, प्रधान मनचंदा जी ने आर्य समाज सरस्वती विहार की ओर से पगड़ी पहनाकर डॉ. रघुवीर जी को सम्मानित किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विनय आर्य ने सभा की ओर से प्रतीक चिह्न भेंट करते हुए कहा कि वैदिक सिद्धान्तों एवं वेदों के विषय में विरोधियों द्वारा जो कुछ भी अनर्गल आक्षेप किये जाते हैं, उनको उत्तर देने के लिए हम डॉ. रघुवीर जी को आगे करते हैं क्योंकि ये वेदादि शास्त्रों के प्रौढ़ विद्वान तथा महर्षि के अनन्य भक्त हैं। इनकी सबसे बड़ी

विशेषता है कि इन्होंने अपने पूरे परिवार को महर्षि दयानन्द का अनुयायी और आर्य समाज का सेवक बना रखा है।

सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने कहा कि पं. राजवीर जी शास्त्री तथा डॉ. रघुवीर जी ने जिस योग्यता पूर्वक सरल, हदयग्राही शैली में मुझे पाणिनीय व्याकरण का ज्ञान कराया, वह स्मरणीय है एवं शलाघनीय है। यह राष्ट्रपति पुरस्कार तथा आर्य समाज से प्राप्त अन्य अनेक पुरस्कार उन्हें उनकी योग्यता एवं पाण्डित्य के कारण प्राप्त हुए हैं, समारोह के मुख्य अतिथि श्री ठाकुर विक्रमसिंह जी ने कहा कि डॉ. रघुवीर जी न केवल यहीं पर अपितु अपने ग्रामीण क्षेत्र में भी अपनी विद्वता, कर्मठता एवं सरल निश्छल स्वभाव के कारण सुप्रसिद्ध हैं। आपका जीवन अनुकरणीय है। हम दोनों एक ही क्षेत्र के हैं अत: मुझे इनकी पूर्ण जानकारी है। अपने ग्राम में इन्होंने 1976 में ही महर्षि दयानन्द हाईस्कूल की स्थापना की थी जो अब इण्टरकालेज के रूप में ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा की ज्योति जला रहा है। समारोह के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी ने कहा डॉ. रघुवीर जी को मैं 1960 से इनके छात्र जीवन से ही जानता हूँ इनका व्यवहार, आचरण तथा विद्या के प्रति अनुराग तभी से हम सभी के लिए अनुकरणीय रहा है। डॉ. रघुवीर जी का पूरा परिवार ही संस्कृतमय है धर्मपत्नी डॉ. शारदा जी भी सेवानिवृत संस्कृत प्राध्यापक हैं। सुपुत्र संकल्प कम्प्यूटर इंजी. होने पर भी संस्कृत बोलता है गुरुकुल पौंधा आदि को जब भी आवश्यकता होती है।डॉ. रघुवीर जी अपनी सेवायें देते रहते हैं, ये मुझसे विद्या में और आयु में बड़े हैं,मैं इन्हें आप्त पुरुष समझता हूँ इसलिए मैं इनका हार्दिक सम्मान करता हूँ।

अंत में डॉ. रघुवीर जी ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद करते हुए कहा कि मेरे जीवन की जो भी उपलब्धियाँ है उनमें मेरे माता-पिता, मेरे पूज्य गुरुजनों तथा आर्य समाज का ही योगदान है। समूचा आर्य समाज ही मेरा घर है, अत: यह सम्मान अकेले मेरा नहीं, अपितु समस्त आर्य समाज का सम्मान है, विद्या का सम्मान है यह जो पगड़ी आर्य समाज की ओर से श्री मनचंदा जी ने मुझे पहनायी है इसके गौरव की अभिवृद्धि करता रहूँगा। इसे आक्षेप भाजन नहीं बनने दूंगा। राष्ट्रपति सम्मान की पाँच लाख राशि तथा 20 अप्रैल, 2019 को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा पुणे में किये गये सम्मान के अवसर पर प्रदत्त राशि तथा इससे पूर्व भी प्राप्त सम्मानों की राशि संस्कृत प्रचार-प्रसार तथा वेद रक्षा में ही व्यय की जायेगी। घर में इसका उपयोग नहीं होगा मेरा जीवन आर्य समाज, वेद तथा संस्कृत के लिए समर्पित है।

- अरुण आर्य, मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा राष्ट्र समृद्धि यज्ञ : आर्य सन्यासियों के आशीर्वाद के साथ राजनाथ सिंह का चुनाव प्रचार आरम्भ

30 अप्रैल 2019 को माननीय श्री राजनाथ सिंह जी के कार्य क्षेत्र लखनऊ में, लोकसभा के चुनाव प्रचार के शुभारम्भ हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ की यज्ञशाला में राष्ट्र समृद्धि यज्ञ का आयोजन किया गया। तत्पश्चात दोपहर को आर्यजनों का एक प्रतिनिधि मंडल जिनमें मुख्यत: स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती, स्वामी यज्ञमुनि सरस्वती, अन्य संन्यासीवृन्द, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान डॉ. धीरज सिंह व मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के महामन्त्री सतीश चड्ढा, आखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर, आर्य वीर दल के महामंत्री श्री बृहस्पति आर्य व व्यायाम शिक्षक श्री दिनेश आर्य, श्री संदीप आर्य, आ. सत्यप्रकाश, आ.सन्तोष वेदालंकार, आ. सोमवृत शास्त्री, आ. सोहनलाल शास्त्री, आ. हरीश शास्त्री, आ. रामकृष्ण शास्त्री, श्री कृष्ण मुरारी, श्री भुवनेश पाठक, श्री शैलेन्द्र आर्य, श्री आशुतोष आर्य, श्री गम्भीर सिंह आर्य, विभिन्न स्थानीय आर्य समाजों व संस्थाओं के अधिकारी व प्रतिनिधियों का समूह, आर्य गुरुकुल के ब्रह्मचारी, श्री योगेश आत्रेय के निर्देशन में माननीय श्री राजनाथ सिंह जी, केन्द्रीय गृहमन्त्री से मिलने व शुभाशीष लेने और शुभकामनाएं देने पहुंचे तथा लगभग 35-40 मिनट उनके संग बताएं।

आर्य प्रतिननिधि सभा उत्तर प्रदेश के कार्यालय में आयोजित राष्ट्र समृद्धि यज्ञ से पूर्व उपस्थित आर्यसमाज के संन्यासियों एवं अधिकारियों से चर्चा करते दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, उत्तर प्रदेश सभा के प्रधान डॉ. धीरज सिंह जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी एवं अन्य आर्यजन।

केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री राजनाथ सिंह जी वेदों का सैट - वेद भगवान पुस्तक भेंट करते स्वामीसम्पूर्णानन्द जी, स्वामी आर्यमुनि जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, महामन्त्री विनय आर्य जी। राजनाथ सिंह जी से चर्चा करते आर्यसमाज के अधिकारीगण, श्री योगेश आत्रेय एवं संन्यासीगण।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों ने किया गुरुकुल अयोध्या का दौरा

श्रीरामजन्म भूमि - बाबरी मस्जिद केस में मध्यस्थता समिति की बैठक में भाग लेने के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं मन्त्री श्री सरेशचन्द्र गुप्ता जी गत दिनों लखनऊ पहुंचे। वापसी में वे आर्यसमाज के प्रसिद्ध गुरुकुल श्री नि:शुल्क गुरुकुल महाविद्यालय आयोध्या पहुंचे और गुरुकुल के अधिकारियों के साथ गुरुकुल का निरीक्षण किया। उन्होंने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को सम्बोधित भी किया और आर्यसमाज के लिए बनाई गई योजनाओं की जानकारी दी।

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, बामनिया का सी.बी.एस.ई. बोर्ड परीक्षा कक्षा 10वीं का शानदार परिणाम

महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. दयानन्द आर्य विद्या निकेतन, बामनिया का 10वीं कक्षा का सी.बी.एस.ई. बोर्ड के परीक्षा परिणाम शानदार रहा। कुल सम्मिलित विद्यार्थियों में से 41% विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। स्कूल में 86.6% अंक लाकर मुस्कान जैन ने प्रथम, चैताली भटेवरा 84.4% से द्वितीय और आशीष मीना ने 73.8% प्राप्त कर तृतीय स्थान प्राप्त किया। संस्था की उपलब्धि पर संस्था अध्यक्ष पद्मभूषण आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी, उपप्रधान श्री विनय आर्य जी, महामंत्री श्री जोगिन्द्र खट्टर जी, शिक्षा निदेशक श्रीमती अनु वासुदेवा, श्री गोवर्धन सिंह राठौर, श्री जीववर्धन शास्त्री, श्री विश्वास सोनी, श्री संजय मखोड़, प्राचार्य श्री प्रवीण अत्रे ने समस्त विद्यार्थियों को बधाई देकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की तथा समस्त पालकों का संस्था के प्रति विश्वास और सहयोग हेतु आभार जताया।

- प्रधानाचार्य

What Type Of Religion, We Require?

In the last nearly three thousand years, little did we know that how many 'castes' have been made by human being for human beings or how many cultures or religious sects are made new gods are invented, newer methods of worship and its center are created. From heaven and hell, the methods of salvation are suggested to everybody but in the end, the question arises, does man get the foremost thing-peace? Perhaps, everyone will say 'no' to this! Because higher the number of sects and religions higher have become violence. Every new sect and religions have carried out violence and bloodshed to prove their superiority.

In fact, people who established new religions in the past three thousand years did not allow humans to understand religion and peace. Ideologies were created and in the name of religion, people were tormented in the furnace of hate for their intended goal. How many people can answer that the basic foundation of each religion is kindness and compassion, or hatred and violence?

What is the real element of religion? What is the last point of religion? What do we do? Where's the route? In fact, when two things meet- religion is introduced. One is culture, which is related to the outside world while the other is spirituality, which is related to our soul. The essence of religion's element is inside the soul. One more meaning of religion is embedded in nature- like nature the same will be the religion. Therefore, when there is a combination of both culture and nature i.e. the inner element and the outer, both are the same then the new religion is introduced.

But in the world, the way all the newly mentioned sects have acted in the name of religion that has changed the entire character of religion, its entire structure, and interpretation Because of all such modifications in the religious beliefs of the world, man has forgotten the meaning of the word- 'religion'. They are stripped of religion and that is replaced by traditions. Their ways of dressing have been changed, they are told to follow the self-made ways of worship and said that it is the real religion, spread it!

Even the methods of spreading religion were taught, by forced violence, by bloodshed, by lie, or deceit, and it was spoken as the way of running a religion. Can anyone tell that religion is created or made run? Religion cannot be formed; religion is not a cart which could be created and run. Religion is the science of the soul where it is illuminated in the realm of humanity, where there is concern about nature from all creatures, which manifested the attitude of all creatures towards all creatures, that all belong to their family, religion will be there, same religion and also there will be the philosophy of religion. Now back to the original question, what type of religion, we require and why?

So, its easiest answer is that among other greatest needs of the human being one is the need for self-actualization, self-realization for others, self-investigation, feeling of responsibilities and moral behaviour towards each other. That' why it is said in the Yajurveda that man should never keep hostile intentions for any creature but he must remain in love with each other, a man should consider all beings as his friends and work for their prosperity - Such type of messages save human beings from disintegration. Rigveda says that the explanation of your truth and untruth should be impartial, don't confine for any single community rather you organize and help everyone in enhancing health, education, and prosperity. Your mind remains unbiased and without negative thoughts and also in your happiness and prosperity, you must assume your own happiness and progress. For the sake of true happiness, you should do noble works. Together you must strive to find the truth and erase the falsehood.

Religion is beyond individualism; human beings can build organizations but not religion. Because religion is the subject of the operation of the soul. People can be instructed to move by the organization, but religion moves forward with it. That is why I can say without prejudice that the only one which talks about the welfare of mankind, the same can be the religion. And the message of humanity was never given by other religions rather it is only Vedic religion which did so. Because all except the Vedic communities were run by some or the other person. While enforcing their religion, they called themselves -God's messenger and the shadow of God, so that people could follow them.

Religion provides for the freedom of expression; religion suggests the path to fight with the problems of mind; religion gives freedom; religion is not bondage, and if any bond is there then it cannot be religion. But on the contrary, while driving their own religion, all these people have given their ideas to their society, so that these people could be stuck in different fantasies, such facilities and structures of horror and violence were presented in front of the people that they could remain bounded with the sect. People were made converted into cattle. As soon as a child was born it was bounded chained, the freedom of speech was stripped, and it was said the whatever we are saying is the truth, if there is any argument or question then only the sword will answer it. Can you think of yourself that whether the religion will prevail in such an environment or do we need such religion?

- Vinay Arya, Gen.Sec

पृष्ठ 4 का शेष

करें, अभ्यास और वैराग्य (राग-द्वेष) से इच्छाओं पर नियंत्रण हो पायेगा, अर्थात् अविद्या को खत्म करना है और विद्या की वृद्धि करनी होगी।

परिवार को उत्तम कैसे बनायें - जैसे यदि संविधान का पालन करें तो देश में सुख-शांति बनी रहती है। दिनचर्या व्यवस्थित करें, उठने, व्यायाम करने, खाना खाने, पढ़ने, कार्य करने व सोने का समय निश्चित करें। इससे जीवन व्यवस्थित होगा। परिवार में इक्ठा हो कर बैठें, प्रेम बढ़ेगा, आदर मान बढ़ेगा। अच्छी भाषा व सम्मान से बोलें, छोटे बड़े सब का नम्रता, आदर पूर्ण सम्मान करें। नकारात्मक विचार व सोच न रखें, नकारात्मक वातावरण न बनाऐं। आपस में विचार-विनिमय करें, समस्यों को सुलझाऐं। बड़ों का सम्मान करें। सन्तोष का पालन करें, धैर्य रखें, मेहनत पूरी करें, तपस्या करें, हर परिस्थिति के लिए तैयार रहें। विचारपूर्वक शान्ति से समस्या का समाधान खोजें, दुःखी न हों, कोई बात नही, मन को शांत रखें।

कर्मों से दूसरों को दुःख न देवें, व्यवहार में सन्तोष का पालन करें, सुख मिलेगा। हानि न पहुंचाएँ, अनुशासन में रहें, लेकिन अन्याय का विरोध करें। दण्ड व्यवस्था से सुधार होता है। ईश्वर के दण्ड का ध्यान रखें, वह न्यायकारी हैं। वह माफ नहीं करते हैं।

बिना कामना के कोई कर्म नहीं होता, निष्काम कर्म अर्थात् भौतिक सुख की इच्छा के बिना किये गए कर्म। अच्छे कर्मों का शत प्रतिशत मोक्ष को प्राप्त करना होगा। परोपकारी व निष्काम कर्म करें तो मोक्ष प्राप्त होगा। अन्तिम लक्ष्य मोक्ष है।

उत्तम पुरुषार्थ द्वारा अच्छे कर्मों को करते हुए, ज्ञान को बढ़ाते हुए, दोषों को समाप्त करते हुए तथा ईश्वर की शुद्ध उपासना द्वारा जीवन स्तर को ऊँचा करते हुए, मोक्ष मार्ग पर बढते हुए मोक्ष प्राप्त कर पायेंगे। ईश्वर का ध्यान करना चाहिए। सुख पाना है तो मोक्ष को प्राप्त करने का प्रयास करें। मोक्ष में दुःख नहीं होता। ईश्वरीय आनन्द मोक्ष में ही मिलता है।

ध्यान द्वारा ईश्वर में रुचि लगाएं, मन को ईश्वर के विचार पर स्थिर करें, संसार के विषयों पर दोषों के ऊपर विचार करें, सोचेंगें तो रुचि कम होगी, तब धीरे-धीरे ईश्वर में रुचि बढ़ने लगेगी, मन स्थिर होने लगेगा। लगातार प्रयास करें, शंकाओं को दूर करें, स्तुति करें और प्रार्थना करें। पुरुषार्थ के उपरांत ही प्रार्थना सफल होती है। दुनिया सुधरे या न सुधरे, हमें जरूर सुधरना है, यह संकल्प करें।

इच्छानुसार मोक्ष नही मिलता। जब ज्ञान हो जाए कि जन्म-मरण, क्षणिक सुख - दुःख के चक्कर से निकलना है। मोक्ष में जाकर सारे दुःखों से छूटना है, ईश्वरीय आनन्द, लम्बे समय तक प्राप्त करना है तथा पूरे ब्रह्माण्ड की सैर (देखना व समझना)करनी है तब मोक्ष पुरुषार्थ, निष्काम कर्म, ईश्वर स्तुति व ईश्वर उपासना के संयुक्त प्रयास व लगन से प्राप्त होगा।

दात्ता सुख बरसा, सुख बरसा .... प्रार्थना के साथ साथ पुरुषार्थ भी करना पडता है। संसार व मोक्ष में तुलना करें, दुःखों को पहचाने, समझौता न करें, अविद्या को दूर करें। उपाय करें कि मन जड़ हैं, उस को जहाँ आप चाहें लगावें, इच्छानुसार लगावें, मन स्थिर करें, नियंत्रण में रखें, ध्यान में धीरे धीरे मन लगने लगेगा, समय बढाऐं, यह एक तरफा क्रिया है, धीरे धीरे ईश्वर से आनन्द मिलने लगेगा, यही ध्यान समाधि में परिवर्तित हो जायेगा।

मोक्ष को लक्ष्य बनायें, लम्बे समय तक प्रयास करना पड़ेगा, विचार उत्पन्न करना होगा, ईश्वर को याद करना होगा। संसार की वस्तुओं में अरुचि पैदा करनी होगी, सांसारिक वस्तुओं में रुचि को रोकना होगा।मेहनत करें, सकारात्मक सोच रखें। ईश्वर के गुणों का चिन्तन करें, प्रतिदिन अभ्यास करें, मन न लगे फिर भी प्रयास करतें रहें। संसार के दुःख-दोष देखने होंगे, ईश्वर के गुणों को देखना समझना होगा। ईश्वर इच्छा को प्रयत्नशीलता से जगाना होगा, मन को नियन्त्रित करना होगा, ईश्वर में लगाना हो। तभी मोक्ष मार्ग के बारे में विचार जागृत होंगे।

भविष्य में भी मानव जीवन पाने हेतु पुरुषार्थ, निष्काम कर्म, परोपकार, विद्या की वृद्धि, स्वाध्याय, समाधि व उपासना करनी होगी। गलत कर्मों के करने पर दण्ड मिलेगा। 3-4 बार पांच-पांच मिनट का ध्यान भी लगवाया। यहां आकर 14 कार्यशालाओं का अमूल्य समय देकर हम सब को अनुगृहीत किया। आर्यसमाज - रमेशनगर, मानसरोवर गार्डन, श्रद्धा पूरी, बालीनगर राजा गार्डन, बसई दारापुर, सुर्दशन पार्क, मोती नगर एवं कीर्ति नगर के सभी पदाधिकारियों, कार्यकारिणी तथा सदस्यों की ओर से श्रद्धेय स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक जी का धन्यवाद किया गया।

- सतीश चड्ढा, मन्त्री व कार्यक्रम संयोजक, 9313013123

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्यसमाज कीर्ति नगर में महिला सम्मेलन सम्पन्न

आर्यसमाज कीर्तिनगर एवं प.दिल्ली आर्य महिला वेद प्रचार मण्डल के तत्त्वावधान में आर्य समाज स्थापना तथा वेद प्रचार मण्डल स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में 'भव्य महिला सम्मेलन' 21 अप्रैल, 2019 को श्रीमती कविता आर्य व श्रीमती सुनीता पासी के नेतृत्व में, सर्वश्रीमती कमलेश चावला, विनीता चावला, विमल बुद्धिराजा व कमलेश गुलाटी के अथक परिश्रम व सहयोग से आर्यसमाज कीर्तिनगर में आयोजित किया गया। साध्वी उत्तमायति जी तथा श्रीमती कृष्णा चड्ढा जी का सम्मान किया गया। श्रीमती प्रकाश कथूरिया, श्रीमती सुशीला ग्रोवर एवं श्रीमती वीना आर्य के साथ आ. प्रगति आर्य के ब्रह्मत्व में यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। श्रीमती कल्पना आर्य के उद्बोधन और श्रीमती विमलेश बंसल के कविता पाठ के उपरांत, आर्य कन्या गुरुकुल, राजेन्द्र नगर की ब्रह्मचारिणियों ने मनोरंजक भजनों ने सभी आर्यजनों का मनमोह लिया। *- सुनीता पासी*

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

38वां वैचारिक क्रान्ति शिविर

उद्घाटन : 16 मई : सायं 6 बजे : आर्यसमाज रानी बाग, दिल्ली

समापन : 26 मई प्रातः 10 बजे : मावलंकर हॉल, रफी मार्ग

आर्यजन दोनों कार्यक्रमों में अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर देश के विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों से पधारे कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें।

निवेदक **महाशय धर्मपाल** प्रधान **धर्मपाल गुप्ता** व.उ. प्रधान **जोगेन्द्र खट्टर** महामन्त्री (9810040982) **योगेश आर्य** कोषाध्यक्ष

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश का

चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

24 मई से 2 जून 2019 गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद (हरि.)

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश का ग्रीष्मकालीन वार्षिक चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर 24 मई से 2 जून, 2019 तक गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद (हरियाणा) में आयोजित किया जा रहा है। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें–

बृहस्पति आर्य, महामन्त्री, 9990232164

प्रवेश सूचना

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

आर्यसंन्यासी स्वामी दर्शनानन्द जी सरस्वती जी द्वारा वर्ष 1907 में स्थापित गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर , हरिद्वार में स्नातकोत्तर स्तर तक एम.ए. (संस्कृत), योगाचार्य (2 वर्ष), पी.जी. डिप्लोमा, संस्कृत की पूर्वमध्यमा, उत्तरमध्यमा, शास्त्री, आचार्य परीक्षा एवं बी.एड. आदि के पाठ्यक्रम संचालित हैं। कक्षा 6 से 10 तक उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद्, रामनगर (नैनीताल) से मान्यता प्राप्त हैं। प्रवेश शुल्क 6000/- प्रथम बार इसके अतिरिक्त भोजन व्यय 1700/- मासिक देय होगा। अधिक जानकारी के लिए गुरुकुल की वैबसाइट www.gurukulmahavidyalaya.com पर लॉगइन करें अथवा gmv1908@yahoo.com पर ईमेल करें।

- बलवन्त सिंह चौहान, अधिष्ठाता, 9412073578, 80, 81, 82

अमेरिका सभा के अन्तर्गत 29वां आर्य महासम्मेलन जुलाई 25-28, 2019

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका और आर्य समाज शिकागोलैंड की ओर से 29 वें आर्य महासम्मेलन जुलाई 25-28, 2019 को, शिकागो, अमेरिका में आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन का विषय है - वेद की ज्योति द्वारा अपने जीवन का प्रदीपन है। इसके अन्तर्गत वैदिक परिप्रेक्ष्य में विश्व शांति, निरंतर समरसता, नारी सशक्तीकरण के विषय सम्मिलित होंगे।

इस अवसर पर योग एवं ध्यान सत्र, रोचक युवा सत्र, सांस्कृतिक कार्यक्रम, आर्य समाज से संबंधित सम-सामयिक विषयों पर चर्चा, सामाजिक कल्याण सम्बंधित चर्चाओं, और वयस्कों तथा युवाओं के लिए गतिविधियों को शामिल किया जाएगा, जिससे कि हम सभी अपने भौतिक, नैतिक-आध्यात्मिक और सामाजिक उत्थान के लक्ष्यों की ओर बढ़ते हुए संसार का भी उपकार करते चलें। सम्मेलन में भाग लेने वालों के लिए ऑनलाइन पंजीकरण अनिवार्य है।

भारत से पहुंचने वाले आर्यजनों के लिए विशेष यात्रा का का प्रयास किया जाएगा। जो महनुभाव महासम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक हों वे कृपया अपना विवरण aryasabha@yahoo.com पर भेजें। सम्मेलन के बारे में अधिक जानकारी के लिए www.aryasamaj.com/ams पर लॉगऑन करें।

सुरेशचन्द्र आर्य (प्रधान) **प्रकाश आर्य** (मन्त्री) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

डॉ. सुखदेव सोनी (सम्मेलन संयोजक)

विश्रुत आर्य (प्रधान) **भुवनेश खोसला** (मन्त्री) आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : 2 जून से 16 जून 2019

स्थान : गुरुकुल शिवालिक अलियासपुर अम्बाला (हरियाणा)

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के अध्यक्ष डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती जी की अध्यक्षता में शाखानायक, उप व्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण हेतु राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। **प्रवेश शुल्क : शाखानायक : 500/-रुपये, उप व्यायाम शिक्षक एवं व्यायाम शिक्षक के लिए 600/- रुपये है** (पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी।) विस्तृत जानकारी के लिए संयोजक श्री रविन्द्र सिंह 9991700034 से सम्पर्क करें।

- सत्यवीर आर्य, प्रधान संचालक, 9414789461

सार्वदेशिक आर्यवीरांगना दल के तत्त्वावधान में

राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर

31 मई से 9 जून,19 : महर्षि दयानन्द निर्वाण स्थली, अजमेर (राजस्थान)

शिविरार्थी की आयु कम से कम 14 वर्ष हो। *शिविरार्थी को शिविर स्थल पर 30 मई दोपहर 1 बजे तक अवश्य पहुंचना होगा। * सभी शिविरार्थी अपना नामांकन 31 मई दोपहर 1 बजे तक अवश्य करा लें। शिविर में शिक्षिका, सह शिक्षिका, नायिका की भी इस बार अलग कक्षाएं लगाई जाएंगी। परीक्षा में उत्तीर्ण आर्य वीरांगनाओं को प्रमाण पत्र दिए जाएंगे।

- साध्वी डॉ. उत्तमायति, प्रधान संचालिका, 9672286863

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में

विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : 19 मई से 26 मई 2019, आर्य कन्या गुरुकुल, नरेला, दिल्ली

शिविरार्थी की आयु 11 वर्ष से अधिक हो। * शिविरार्थी को शिविर स्थल पर 19 मई को प्रातः 11 बजे तक अवश्य पहुंचना होगा। शिविर शुल्क 400/- रुपये है। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें–

श्रीमती शारदा आर्या, संचालिका, 9971447372

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित

सिविल सर्विसेज IAS परीक्षा - 2019 एवं 2020

भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी ध्यान दें

आर्यसमाज के शिक्षण संस्थानों/गुरुकुलों/सेवाकेन्द्रों/बालवाड़ियों, डी.ए.वी. संस्थानों/ विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त ऐसे प्रतिभावान छात्र/छात्राएं जो वर्ष 2019 में आयोजित होने वाली सिविल सर्विसिज एग्जामिनेशन में भाग लेना चाहते हैं, अर्थिक एवं मूलभूत आवश्यकताओं के अभाव के कारणों से परीक्षा तैयारियां नहीं कर पा रहे हैं उन सबके लिए आर्यसमाज की ओर से स्वर्णिम अवसर।

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की ओर से राष्ट्रवादी विचारधारा वाले, आर्य शिक्षण संस्थानों में शिक्षा प्राप्त सुयोग्य पात्रों को आर्थिक सहयोग एवं परीक्षा तैयारियों के लिए प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करने की घोषणा की जाती है। योजना का लाभ प्राप्त करने के इच्छुक महानुभावों को एक लिखित/मौखिक एवं बौद्धिक परीक्षा पास करनी होगी। सफल परीक्षार्थियों में से प्रथम 40 अभ्यर्थियों को दिल्ली में आमन्त्रित करके, भोजन, आवास एवं तत्सम्बन्धी समस्त सुविधाएं निशुल्क प्रदान की जाएंगी तथा प्रशिक्षण की तैयारियां कराई जाएंगी। इस योजना का लाभ उठाने के इच्छुक विद्यार्थी/परीक्षार्थी अपने शैक्षिक प्रमाण पत्रों, वित्तीय स्थिति के विवरण तथा आवश्यक कागजातों की प्रति के साथ अपना आवेदन पत्र संस्थान की ईमेल आई.डी. dss.pratibha@gmail.com पर ईमेल करें। अधिक जानकारी के लिए मो. 9540002856 पर सम्पर्क करें। परीक्षा की तिथि शीघ्र ही घोषित की जाएगी। ***- व्यवस्थापक***

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।

- सत्यप्रकाश आर्य 9650183335

सोमवार 6 मई, 2019 से रविवार 12 मई, 2019
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 9-10 मई, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू.(सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 8 मई, 2019

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौन्धा देहरादून द्वारा आयोजित

योग-साधना एवं स्वाध्याय-शिविर

दिनांक : 27 मई से 31 मई 2019 तक

स्थान : श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल, पौन्धा, देहरादून (उ.ख.)

'स्वाध्यायान्मा प्रमदः'(तैत्तिरीयोपनिषद्-१/११) अर्थात् स्वाध्याय से प्रमाद (आलस्य) नहीं करना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने प्राचीन आर्ष परम्परा को उद्धृत करते हुए सभी आश्रमों में ईश्वरोपासना एवं स्वाध्याय की परम्परा को अक्षुण्य बनाये रखने का निर्देश किया है। वर्तमान में स्वाध्याय व ईश्वरोपासना से विमुख होने से अनेक प्रकार की भ्रांतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। उपनिषद् के निर्देश का अनुपालन करते हुए दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा एवं श्रीमद् दयानन्दार्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा देरादून के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 31 मई, 1, 2 जून 2019 को आयोजित होने वाले श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा देहरादून के 19 वें स्थापना दिवस एवं वार्षिकमहोत्सव के शुभअवसर पर योग-साधना एवं स्वाध्याय शिविर का आयोजन 27 मई से 31 मई 2019 तक किया जा रहा है। इस शिविर में पूज्य स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के मार्गदर्शन में योग-साधना का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा स्वाध्याय शिविर के आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री जी (मुम्बई) होंगे। पिछले वर्षों में सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के प्रकरण का अध्ययन किया गया। इस सत्र में महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रणीत पंचमहायज्ञविधि का अध्ययन कराया जायेगा। शिविर में शुद्ध-मन्त्रोच्चारण, मन्त्रों के अर्थ, पंचमहायज्ञविधि की अनिवार्यता आदि विषयों पर चर्चा-परिचर्चा की जायेगी।

आप सपरिवार इष्ट मित्रों के साथ अधिक से अधिक संख्या में स्वाध्याय एवं योग-साधना शिविर में सादर आमन्त्रित हैं। शिविर में भाग लेकर आत्मकल्याण के उपासक बनें। आपके निवास, भोजन आदि की समुचित व्यवस्था गुरुकुल की ओर से निःशुल्क रहेगी।

नोट : शिविरार्थियों को शिविर-दिनचर्या में सहभागी बनना आवश्यक है। शिविर में कॉपी, पेन, सम्भव हो तो पंचमहायज्ञविधि की पुस्तक तथा ऋतु अनुसार ओढ़ने के लिए चादर साथ लायें।

मार्गसंकेत

देहरादून रेलवे स्टेशन एवं बसस्थानक (ISBT) से प्रेमनगर पहुँचकर पौन्धा जाने वाले मैजिक से गुरुकुल पौन्धा पहुँचा जा सकता है। जिन सज्जनों की सूचना पूर्व में ही होगी तो उन्हें रेलवे स्टेशन अथवा बसस्थानक से लाने की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से की गई है।

सम्पर्क सूत्र

श्री सुखवीर आर्य (संयोजक एवं मन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) - 9350502175
गुरुकुलपौन्धा - 9411106104, 7900665649, 9411310530, 7017579268, 8810005096

प्रतिष्ठा में,

एक करोड़ छप्पन लाख+
लोगों ने अब तक देखा

ओ३म् thearyasamaj.org

आर्यसमाज YouTube चैनल

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें। यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।
यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित
महर्षि दयानन्दकृत
सत्यार्थ प्रकाश
उर्दू भाषा में अनुवाद)

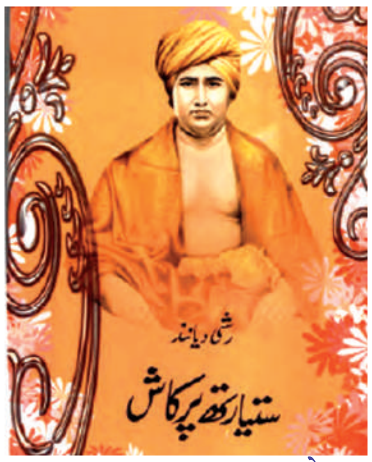

मूल्य मात्र 100/- रुपये
श्री बलदेव राज महाजन जी
(आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज)
के विशेष सहयोग से
केवल मात्र 70/- में
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें -
दिल्ली आर्य प्र. सभा, मो. 9540040339

प्रेयर मंत्र
विभिन्न अवसरों हेतु मंत्रों का उपयोगी संग्रह। जागरण मंत्र, शयन मंत्र एवं सूर्योदय / सूर्यास्त के स्थानीय समय के अनुसार संध्या मंत्रों का पाठ करने हेतु स्वतः प्रारम्भ होने वाली उपयोगी एप्लीकेशन।
Google Play
Prayer Mantra

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल या दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रेस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह